International Research Journal of Management and Commerce
ISSN: (2348-9766)
Impact Factor- 5.564 Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कठोपनिषद में लोकाचार

डॉ0 मंजू पटेल
सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी)
श्री भगवान दास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय (हरिद्वार)

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा के अंतर्गत है। इसमें यम और नचिकेता के संवाद रूप से ब्रह्म विद्या का बड़ा विशद वर्णन किया गया है। इसकी वर्णन शैली बड़ी ही सुबोध और सरल है। श्रीमद्भागवतगीता में भी इसके कई मन्त्रों का कहीं शब्दतः और कहीं अर्थतः उल्लेख है। इसमें अन्य उपनिषदों की भाँति जहाँ तत्त्वज्ञान का गम्भीर विवेचन है, वहाँ नचिकेता का चरित्र पाठकों के सामने एक अनुपम आदर्श भी उपस्थित करता है। जब वे देखते हैं कि पिताजी जीर्ण–शीर्ण गौएँ तो ब्राह्मणों को दान कर रहे हैं और दूध देने वाली पुष्ट गायें मेरे लिये रख छोड़ी हैं तो बाल्यावस्था होने पर भी उनकी पितृभक्ति उन्हें चुप नहीं रहने देतीं और वे बालसुलभ चापल्य प्रदर्शित करते हुए वाजश्रवाज से पूछ बैठते हैं–**'तत कस्मै मां दास्यसि'** (पिताजी, आप मुझे किसको देंगे?) उनका यह प्रश्न ठीक ही था, क्योंकि विश्वजित् याग में सर्वस्वदान किया जाता है और ऐसे सत्पुत्र को दान किये बिना वह पूर्ण नहीं हो सकता था। वस्तुतः सर्वस्वदान तो तभी हो सकता है जब कोई वस्तु 'अपनी' न रहे और यहाँ अपने पुत्र मोह से ही ब्राह्मणों को निकम्मी और निरर्थक गौएँ दी जा रही थीं, अतः इस मोह से पिता का उद्धार करना उनके लिये उचित ही था।

इसी तरह कई बार पूछने पर जब वाजश्रवा ने खीझकर कहा कि मैं तुझे मृत्यु को दूँगा तो उन्होंने यह जानकर भी कि पिताजी क्रोधवश ऐसा कह गये हैं, उनके कथन की उपेक्षा नहीं की। महाराज दशरथ ने वस्तुस्थिति को बिना समझे ही कैकेयी को वचन दिये थे; किन्तु भगवान् राम ने उनकी गम्भीरता का निर्णय करने की कोई आवश्यकता नहीं समझी। जिस समय द्रौपदी के स्वयंवर में अर्जुन ने मत्स्यवेध किया और पाण्डव लोग द्रौपदी को लेकर अपने निवास–स्थान पर आये उस समय माता कुन्ती ने बिना जाने–बूझे घर के भीतर से ही कह दिया था कि 'सब भाई मिलकर भोगो।' माता की यह उक्ति सर्वथा लोकविरुद्ध और भ्रान्तिजनित थी, परन्तु मातृभक्त पाण्डवों को उसका अक्षरशः पालन ही अभीष्ट हुआ। ऐसा ही प्रसंग नचिकेता के सामने उपस्थित हुआ और उन्होंने भी अपने पिता के वचन की रक्षा के लिये उनके मोहजनित वात्सल्य और अपेने ऐहिक जीवन को सत्य की वेदी पर निछावर कर दिया।

हमारे बहुत से भाइयों को इस प्रकार के अनभिप्रेत और अनर्गल कथन की मर्यादा रखने के लिये इतना सरदर्द मोल लेना कोरी भूल और भोलापन ही जान पड़ेगा। किन्तु उन्हें इसका रहस्य समझने के लिये कुछ गम्भीर विचार की आवश्यकता है। योगदर्शन के साधनपाद में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रह–इन पाँच यमों का नाम निर्देश करने के अनन्तर ही कहा है–**'जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्'** (यो0सू0 2/31) अर्थात् जाति, देश, काल और कर्तव्यानुरोध की अपेक्षा न करते हुए इनका सर्वथा पालन करना महाव्रत है तथा जाति, देश और कालादि की अपेक्षा से पालन करना अल्पव्रत कहलाता है। इनमें अल्पव्रत में ही लोकाचार, सुविधा और हानि–लाभ आदि के विचार की गुंजाइश

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है। उसे हम व्यावहारिक धर्म कह सकते हैं। यह किसी विशेष सिद्धि का कारण नहीं हो सकता, सिद्धियों की प्राप्ति तो महाव्रत ही होती है। योगदर्शन में इससे आगे जो भिन्न–भिन्न यम–नियमादि की प्रतिष्ठा से भिन्न–भिन्न सिद्धियों की प्राप्ति बतलायी है वह महाव्रती को ही हो सकती है। इस प्रकार का महाव्रत, व्यवहारी लोगों की दृष्टि में भले ही व्यर्थ आग्रह और मानसिक संकीर्णता जान पड़े तथापि वह परिणाम में सर्वदा मंगलमय ही होता है। भगवान् राम का वनवास, परशुराम जी का मातृवध, पुरु का यौवनदान तथा पाँच पाण्डवों का एक ही द्रौपदी के साथ पाणिग्रहण करना–ये सब प्रसंग इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। ऐसा ही नचिकेता के साथ भी हुआ। उनका यमलोक–गमन उन्हीं के लिये नहीं उनके पिता के लिये और सारे संसार के लिये भी कल्याणकर ही हुआ।

यमलोक में पहुँचने पर जब तक यमराज से उनकी भेंट नहीं हुई, तब तक उन्होंने अन्न–जल कुछ भी ग्रहण नहीं किया। इससे भी उनकी प्रौढ़ सत्यनिष्ठता का पता लगता है। उनका शरीर यमराज को दान दिया जा चुका था, अतः अब उस पर यमराज का ही पूर्ण अधिकार था; उनका तो सबसे पहला कर्तव्य यही था कि वे उसे धर्मराज को सौंप दें। इसी से वे भोजनाच्छादनादि की चिन्ता छोड़कर यमराज के द्वार पर ही पड़े रहे। तीन दिन पश्चात् जब यमराज आये तो उन्होंने उन्हें एक–एक दिन के उपवास के लिये एक–एक वर दिया। इससे अतिथि–सत्कार का महत्त्व प्रकट होता है। अतिथि की उपेक्षा करने से कितनी हानि होती है–यह बात वहाँ (अ0 1 व 1 मं0 7–8) स्पष्टतया बतलायी गयी है।

इस पर नचिकेता ने यमराज से जो तीन वर माँगे हैं, उनके क्रम में भी एक अद्‌भुत रहस्य है। उनका पहला वर था पितृपरितोष। वे पिता के सत्य की रक्षा के लिये उनकी इच्छा के विरुद्ध यमलोक को चले आये थे। इससे उनके पिता स्वभावतः बहुत खिन्न थे। इसलिये उन्हें सबसे पहले यही आवश्यक जान पड़ा कि उन्हें शान्ति मिलनी चाहिये। यह नियम है कि यदि हमारे कारण किसी व्यक्ति को खेद हो तो जब तक हम उसका खेद निवृत्त न कर देंगे, हमें भी शान्ति नहीं मिल सकती। यह नियम मनुष्यमात्र के लिये समान है; और यहाँ तो स्वयं उनके पूज्य पिताजी को ही खेद था; इसलिये सबसे पहले उनकी शान्ति अभीष्ट होनी ही चाहिये थी। यह पितृपरितोष उनकी दृष्ट–शान्ति का कारण था, इसलिये सबसे पहले उन्होंने यही वर माँगा।

लौकिक शान्ति के पश्चात् मनुष्य को स्वभाव से ही पारलौकिक सुख की इच्छा होती है; यहाँ तक कि जब वह अधिक प्रबल हो जाती है तो वह ऐहिक सुख की कुछ भी परवाह नहीं करता। इसीलिये नचिकेता ने भी दूसरे वर से पारलौकिक सुख यानि स्वर्गलोक की प्राप्ति का साधनभूत अग्निविज्ञान माँगा; किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि वे स्वर्गसुख के इच्छुक थे। जिस प्रकार उनके पहले वर में पिता की शान्तिकामना थी, उसी प्रकार इसमें मनुष्यमात्र की हितचिन्ता थी। सबके हित में उनका भी हित था। वे स्वयं स्वर्गसुख के लिये लालायित नहीं थे। यह बात उस समय स्पष्ट हो जाती है जब यमराज के यह कहने पर कि :–

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्कामा ँश्छन्दतः प्रार्थयस्व।
इमा रामाः सरथाः सतूर्या न हीदृशा लभ्यनीया मनुष्यैः।
आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः।।

(1/1/25)

वे कहते हैं –

श्वोभावो मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते।।
न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।
जीविष्यामो यावदीशिक्ष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव।।
अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन्।
अभिध्यायन्वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे जीविते को रमेत।।

यस्मिन्नदंविचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्।
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते।।

(अ0 1 व0 1/26–29)

उपर्युक्त उद्धरणों से उनकी तीव्र जिज्ञासा और आत्मदर्शन की अनवरत पिपासा स्पष्ट प्रतीत होती है। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने तृतीय वर माँगा था। यमराज ने उनकी जिज्ञासा की परीक्षा के लिये उन्हें तरह–तरह के प्रलोभन दिये और बड़े–बड़े मनमोहक सब्जबाग दिखलाये परन्तु आत्मामृत के लिये लालायित नचिकेता ने उन पर कोई दृष्टि न देकर यही कहा–'वरस्तु मे वरणीयः स एव 'नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते' इत्यादि।

इस प्रकार, जब यमराज ने देखा कि वे लौकिक और पारलौकिक भोगों से सर्वथा उदासीन हैं, उनमें पूर्ण विवेक विद्यमान है, वे शम–दमादि साधनों से सर्वथा सम्पन्न हैं और उनमें तीव्र मुमुक्षा की प्रच्छन्न अग्नि तेजी से धधक रही है तो उन्हें उनकी शान्ति के लिये ज्ञानामृत की वर्षा करनी पड़ी। यह ज्ञानवर्षा ही सम्पूर्ण लोकों का कल्याण करने के लिये आज भी कठोपनिषद् के रूप में विद्यमान है। परन्तु उससे विशुद्ध बोधरूप अंकुर तो उसी हृदय में प्रस्फुटित हो सकता है जो नचिकेता के समान साधनचतुष्टय सम्पन्न है। परम उदार पयोधर जल तो सभी जगह बरसाते हैं।